अंक : 25 | सहयोग शुल्क : रु.1 | जनवरी : 2019

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

दिव्यांग सेतु

संपादक : - संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

॥ यतो धर्मस्ततो जयः ॥

परिश्रमी व्यक्ति अपने कर्म के द्वारा अपनी इच्छाओं की पूर्ति करते हैं । ऐसे व्यक्ति मुश्किलों व संकटों के आने से भयभीत नहीं होते अपितु उस संकट के निदान का हल ढूँढ़ते हैं।

- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

यह प्रीमियम ॐकार फाउन्डेशन द्वारा भरा जाएगा

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्जन का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक ISFC कोड के साथ)

संपादकीय

मैं नहीं चाहता
कोई झरने के संगीत सा
मेरी हर तान सुनता रहे
एक ऊँची पहाड़ी प' बैठा हुआ
सिर को धुनता रहे।
मैं अब
झुंझलाहट का पुर-शोर सैलाब हूँ
क़स्बा व शहर को एक गहरे समुन्दर
में ग़र्क़ाब करने के दर पे हूँ।

- नोमान शौक

पहला वर्ष हमेशा कठिन होता है, क्योंकि हमें पता नहीं होता की हम जो शुरू करने जा रहे है उसकी अहमियत कितनी बनेगी? लेकिन दूसरा वर्ष पहले वर्ष की महेनत को प्रमाणित करता है।

'दिव्यांग सेतु' के दो वर्ष पूरे हुए। आप सब ने हमको बहोत सराहा। आपने हमें प्रेरणा दी। हम ओर दमखम के साथ काम करेंगे। हर बार नयी कहानियाँ और प्रसंग लेकर आपके सामने प्रस्तुत होंगे।

धन्यवाद। आपके सदैव ऋणी रहेंगे।

दिव्यांग सेतु
मासिक पत्रिका

जनवरी : 2019, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष : 03 अंक : 1

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

079 26405200

'ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट' आयोजित 'दिव्यांग पतंग महोत्सव' में दिव्यांग बच्चोंने ख़ूब आनंद किया

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

दिनांक ०६/०१/२०१९ इतवार के दिन ॐकार फाउंडेशन ट्रस्ट द्वारा संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई की उपस्थिति में हर साल की तरह इस साल भी दिव्यांगजनों के लिए पतंगोत्सव का आयोजन किया गया। जिसमें ५०० से ज्यादा दिव्यांग बच्चों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। इन बच्चों को पतंग, धागा, ऐनक, केप, गुब्बारे, चिक्की के साथ दोपहर को उंधियु और पूरी का भोजन भी ट्रस्ट की ओर से प्रदान किया गया। इस पावन कार्यक्रम की दिव्य झलक...

अरुणिमा ने आखिरी मंजिल को किया फतह

कृत्रिम पैर के सहारे दिव्यांग अरुणिमा ने आखिरी मंजिल को किया फतह

कृत्रिम पैर के सहारे दुनिया की छह प्रमुख चोटियों को फतह कर चूकीं विश्व रिकॉर्डधारी पर्वतारोही अरुणिमा सिन्हा ने आखिरी बची माउंट विन्सन चोटी पर तिरंगा लहराने में कामयाबी हासिल कर ली। एक हादसे में अपनी एक टांग गंवाने वाली सिन्हा ने ट्वीट कर इसकी जानकारी दी।

अरुणिमा दुनिया की पहली ऐसी दिव्यांग महिला हैं, जिन्होंने अंटार्कटिका के सबसे ऊंचे शिखर माउंस विन्सन को फतह किया है। अपनी आखिरी मंजिल की तरफ बढ़ने से पहले उन्होंने अपने आलोचकों का शुक्रिया अदा किया था। उन्होंने कहा था कि मैंने जब एवरेस्ट पर फतह की थी तब दोनों हाथ उठाकर जोर से चिल्लाना चाहती थी। मुझे पागल, विकलांग कहने वालों से कहना चाहती थी कि देखो मैंने कर दिखाया।

सिन्हा वॉलीबॉल खिलाड़ी थीं। अप्रैल, 2011 में लखनऊ से नई दिल्ली के सफर में कुछ बदमाशों ने उन्हें चलती ट्रेन से धक्का दे दिया था। दुर्घटना में उन्होंने अपनी एक टांग गवां दी। अरुणिमा की तमाम उपलब्धियों पर सरकार ने उन्हें पद्मश्री पुरस्कार से

सम्मानित किया था। हाल में उन्हें ब्रिटेन की एक यूनिवर्सिटी ने डॉक्टरेट की मानद उपाधि से भी सम्मानित किया था।

पीएम ने तिरंगा देकर किया था विदा

अपनी इस असाधारण उपलब्धि को हासिल करने से पहले सिन्हा ने राजधानी दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की थी। प्रधानमंत्री ने उन्हें माउंट विन्सन पर लहराने के लिए तिरंगा देकर विदा किया और कामयाबी के लिए आशीर्वाद व शुभकामनाएं दीं थीं।

छह चोटियां कर चुकी हैं फतह

एक कृत्रिम पैर के सहारे एवरेस्ट (एशिया) फतह करने वाली दुनिया की एकमात्र महिला अरुणिमा अब तक किलीमंजारो (अफ्रीका), एल्ब्रूस (रूस), कास्टेन पिरामिड (इंडोनेशिया), किजाश्को (आस्ट्रेलिया) और माउंट अंककागुआ (दक्षिण अमेरिका) पर्वत चोटियों को फतह कर चूकी हैं।

अकबरपुर की बेटी डॉ. अरुणिमा सिन्हा ने अपनी उपलब्धियों से एक बार फिर अंबेडकरनगर जनपद समेत पूरे देश का नाम रोशन किया है। दुनिया की सर्वोच्च पर्वत चोटी माउंट एवरेस्ट पर भारतीय तिरंगा लहराने वाली अरुणिमा सिन्हा ने संकल्प लिया था कि वे सभी सात ऊंची पर्वत चोटियों को फतह करने का अभियान पूरा करेंगी।

गुरुवार को अरुणिमा ने सोशल मीडिया के माध्यम से यह जानकारी दी कि उन्होंने दुनिया की सातवीं सबसे ऊंची पर्वत चोटी अंटार्कटिका की विंसन मैसिफ पर तिरंगा लहराने की सफलता प्राप्त कर ली है।

वॉइस टू
दिव्यांग

दिव्यांग हीरोज़ कार्यक्रम में बच्चों ने समां बांधा

देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में सोमवार नारायण सेवा संस्थान की ओर से आयोजित 'दिव्य हीरोज 2019- दिव्यांग टैलेंट एंड फैशन शो' के दौरान दिव्यांग कलाकारों ने अपने हुनर का जमकर प्रदर्शन किया। राजस्थान के उदयपुर जिले में स्थित धर्मार्थ संगठन-नारायण सेवा संस्थान की ओर से आयोजित इवेंट के समापन दौर में दिव्यांग कलाकारों के विभिन्न समूहों ने फैशन शो के 4 राउंड में व्हीलचेयर, बैसाखी, कैलीपर्स पर और कृत्रिम अंगों के सहारे अलग-अलग श्रेणियों में परफॉर्म किया। प्रत्येक राउंड में 10 दिव्यांग कलाकारों ने रैम्प वॉक किया।

इस कार्यक्रम का सबसे प्रमुख आकर्षण दीया श्रीमाली का स्वागत नृत्य था। दीया एक ऐसी दिव्यांग कलाकार हैं, जिनके हाथ पूरी तरह से विकसित नहीं हो पाए हैं। इसके बाद दर्शकों ने बैसाखी राउंड, लघु नाटक, समूह नृत्य, व्हीलचेयर राउंड और कैलीपर राउंड के बाद दिव्यांग कलाकारों का बैक टू बैक रॉकिंग प्रदर्शन देखा।

इस पूरे इवेंट में जो बात सबसे महत्वपूर्ण थी, वो यह है कि दिव्यांग कलाकार भरपूर आत्मविश्वास के साथ अपनी कृतियों और हुनर को लोगों के सामने पेश कर रहे थे, चाहे रैम्प वॉक का अवसर हो या फिर मंच पर स्टंट करने का मौका ।

इस अवसर पर नारायण सेवा संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने कहा, "इस अद्भुत शो को देखने के बाद मेरे लिए यह सब यकीन करना मुश्किल था, क्योंकि मैंने इन कलाकारों को पहले सिलाई मशीनों को संचालित करने का कौशल सीखते देखा है और फिर मैंने यह भी देखा कि किस तरह वे अपनी स्वयं की रचनात्मकता का उपयोग करते हुए अपने स्वयं के परिधान डिजाइन करने में जुटे थे और अब उन्होंने पूरे आत्मविश्वास के साथ सैकड़ों लोगों के सामने रैम्प पर अपना हुनर पेश किया है। यह मेरे लिए एक यादगार दिन है, जब हम एक साथ दिव्यांग साथियों की कामयाबी और उनकी उपलब्धियों का जश्न मना रहे हैं।"

दिव्यांग हिरोज 2019 कार्यक्रम में प्रस्तुति देते हुए दिव्यांग बच्चें

दिव्यांग डे-केर

दिव्यांग वृषांक का डिस्ट्रिक्ट लेवल पर टेबल टेनिस के लिए चयन हुआ

स्पेशल खेल महाकुंभ के लिए अहमदाबाद डिस्ट्रिक्ट के रमतोत्सव का सिलेक्शन केम्प दिनांक-०५/१२/२०१८ को गुजरात विद्यापीठ के मैदान में हुआ। यह सिलेक्शन केम्प में ॐकार फाउंडेशन ट्रस्ट संचालित 'ॐकार दिव्यांग ट्रेनिंग डे-केर सेंटर' का मानसिकक्षति पीड़ित बालक वृषांक जीतेन्द्रकुमार चावड़ा ८-१५ साल के ग्रुप में टेबल टेनिस खेल के लिए पसंद हुआ।

दिनांक १७/१२/२०१८ को होनेवाले स्पेशल खेल महाकुंभ में पसंद होने पर संस्था वृषांक को शुभेच्छा देती है।

अनूरा शाला

के दिव्यांग बच्चों का तृतीय वार्षिकोत्सव

ANOORA
Learning center for special kids ®

अनूरा शाला के न्यूरोसाइकियेट्री डिस ऑर्डर से प्रभावित बच्चों ने आज स्टेज पर डांस कर के अभिभावकों को भाव विभोर कर दिया। बच्चों और शिक्षक के उत्साह बढ़ाने के लिए गुजराती फिल्म जगत की प्रख्यात कलाकार दीक्षा जोशी उपस्थित थी।

अनूरा शाला में ४ साल से २० साल तक के करीब २० विद्यार्थी स्वतंत्र तरीके से अपनी दैनिक क्रिया सीख रहे है। सेलेब्रल पाल्सी, डाउन सिंड्रोम, हायपर एक्टिव और डिस्लेक्सिया जैसे न्यूरोलॉजीक डिसऑर्डर से पीड़ित बच्चे अनूरा में अभ्यास कर रहे है।

अनूरा गुजरात राज्य बोर्ड से मान्यता प्राप्त एक मात्र एसी शाला है जहाँ हर विद्यार्थी के लिए एक शिक्षक की व्यवस्था है। बच्चों ने आज १२ अलग अलग स्टेज डांस के साथ अभिनय कर के साल दरमियान सीखी हुई कला प्रदर्शित की।

विद्यार्थी यहाँ हररोज ५ घंटे तक रोजमर्रा की क्रियाएं सीखते है, और अक्षर ज्ञान के साथ जरुरी थेरेपी भी दी जाती है।

यहाँ विद्यार्थियों को पढाई के साथ सब त्योहार भी मानते है।

गुजराती फ़िल्म ऐक्ट्रेस दीक्षा जोशी बच्चों को प्रोत्साहित करते हुए

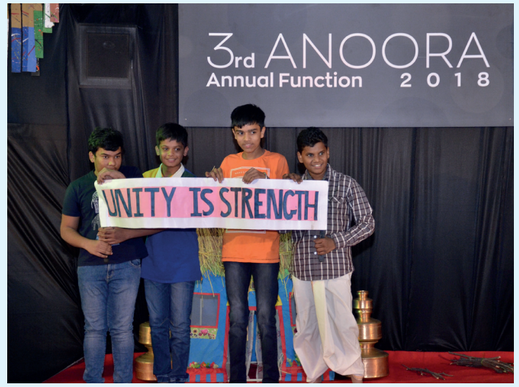

वॉइस फॉर
दिव्यांग

वंचित असहायों की सेवा दिव्यांग नागेंद्र का लक्ष्य

पीड़ित मानवता की सेवा यूं तो समाज में हर कोई करना चाहता है। लेकिन, जब एक दिव्यांग अपनी पीड़ा संग जनसेवा की राह पर चलता है तो वह नजीर बन जाता है। पूर्वी चंपारण के तेतरिया प्रखंड मुख्यालय से दो किलोमीटर दूर मधुआहा माल गांव निवासी नागेंद्र कुमार दिव्यांग होने के बाद भी सेवा करने की मिशाल हैं। दोनों पैरों से दिव्यांग नागेंद्र ने इंटर की पढ़ाई पूरी करने के बाद समाज सेवा करने का मन बनाया। गरीबी ने उन्हें बहुत सताया था। सेवा की राह में आर्थिक बाधा कभी नहीं आई। सेवा करने की कड़ी में सबसे पहले इस युवा ने इलाके गरीब बच्चों को पंचायत सरकार भवन में नियमित पढ़ाना शुरू किया। फिर जब बच्चों को अक्षर ज्ञान हो गया तो लगातार बच्चों को स्कूल से जोड़ने की मुहिम चला रहे हैं। फिर नागेंद्र को लोगों ने बना दिया वार्ड सदस्य नागेंद्र की सेवा को देखते हुए स्थानीय लोगों ने उन्हें वार्ड सदस्य बना दिया। इस सफलता के बाद दिव्यांग को बल मिला और वे अपने अभियान को आगे बढ़ाने में लग गए। यहां बता दें कि नागेंद्र ने तेतरिया हाई स्कूल से दसवीं और संत विनोबा रामाशीष महाविद्यालय, घेघवा, बाजीदपुर कॉलेज से इंटर करने के बाद समाजसेवा में आए। 2013 से उनका यह अभियान सतत चल रहा है। इस बीच 2016 में वे वार्ड सदस्य बन गए। आम आदमी तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाने की कवायद स्थानीय युवाओं के लिए नजीर बने नागेंद्र के पास एक ट्राइ साइकिल है। ये बच्चों को शिक्षा दान देने के बाद नियमित तौर पर अपनी साइकिल से ब्लॉक व अंचल आते हैं। यहां आये लोगों से मिलते हैं। उनकी समस्या जानते हैं। समस्याओं का अंत तलाशते हैं। वहीं विधवा पेंशन, प्रधानमंत्री आवास योजना, मुख्यमंत्री कन्या योजना, वृद्धा पेंशन, जाति, आवासीय, जन्म-मृत्यु से संबंधित फॉर्म भरते हैं। ताकि गांव के लोगों किसी तरह की परेशानी नहीं हो। इसी के साथ पदाधिकारी और कर्मचारी से मिलकर गरीबों के काम के लिए गुजारिश करते हैं। ताकि आम आदमी तक पहुंचे सरकारी योजनाओं का लाभ दिव्यांग नागेंद्र कुमार बताते हैं कि बचपन में ही दोनों पैर से दिव्यांग होने के बाद मन में अपनी अलग पहचान बनाने की चाह थी। ऐसे में यह ठाना कि खुद शिक्षित होकर गरीब बच्चों को शिक्षा देंगे। सरकारी योजनाओं का लाभ आम आदमी तक पहुंचाने के लिए जागरूकता अभियान चलाएंगे।

वॉइस फॉर
दिव्यांग

सुप्रीम कोर्ट ने दिव्यांगजनों के लिए इनकम टैक्स कानून का प्रावधान बदलने का सुझाव दिया

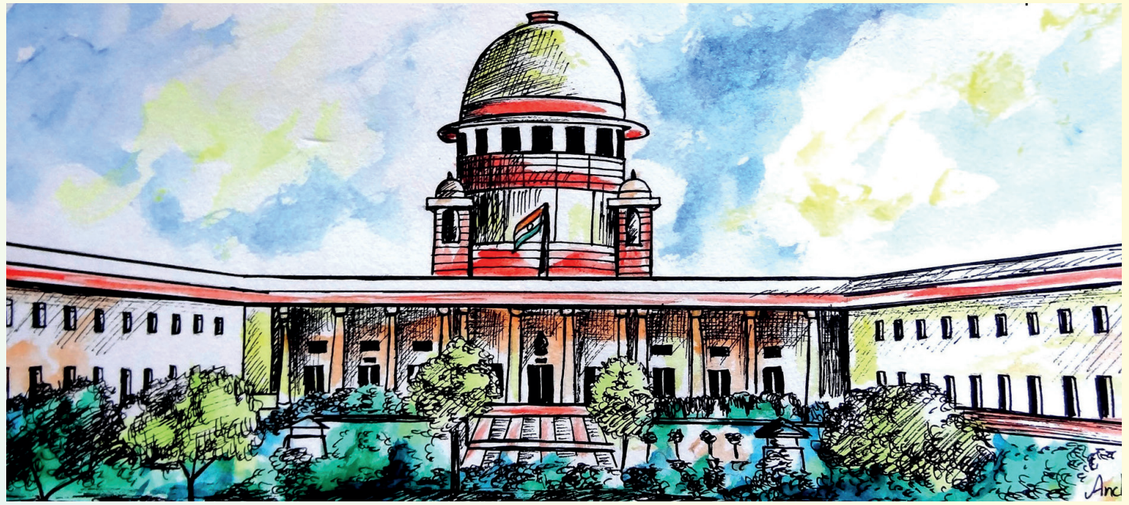

सुप्रीम कोर्ट ने सुझाव दिया कि केन्द्र को आयकर कानून के उस प्रावधान पर फिर से गौर करना चाहिये जो यह कहता है कि दिव्यांग आश्रित को बीमा पॉलिसी धारक की मौत के बाद ही सालाना भत्ते या एकमुश्त राशि का भुगतान किया जायेगा।

न्यायमूर्ति ए. के. सीकरी की अध्यक्षता वाली पीठ ने केन्द्र से इससे जुड़े सभी पहलुओं पर विचार करने को कहा। इसमें यह पहलू भी शामिल है कि विकलांग आश्रित को माता पिता या अभिभावक के जीवनकाल में भी एकमुश्त भुगतान की जरूरत पड़ सकती है और ऐसे में आयकर कानून की धारा 80 डीडी में 'उचित संशोधन करने की संभावना खोजी' जानी चाहिये।

पीठ ने अपने फैसले में कहा, 'विधायिका के नियम के मुताबिक पॉलिसी के तहत राशि, वार्षिक भत्ता पालिसी धारक की मृत्यु के बाद ही जारी होगा। यह विधायी व्यवस्था है। इस प्रावधान को कोई चुनौती नहीं दी गई है। प्रार्थना यह है कि कानून की धारा 80डीडी में उचित संशोधन किया जाए।' पीठ ने कहा, 'यह अदालत संसद को संशोधन या किसी वैधानिक प्रावधान को खास तरीके से बनाने का निर्देश नहीं दे सकती।' पीठ में न्यायमूर्ति अशोक भूषण और एस ए नजीर भी शामिल है।

अदालत ने यह फैसला रवि अग्रवाल की याचिका पर सुनाया जो दिव्यांग हैं और उनका कहना था कि उन्होंने उन दिव्यांग बच्चों के हित में यह याचिका दायर की जिनके माता पिता ने अपने बच्चों की आजीविका के लिए एलआईसी से 'जीवन आधार पॉलिसी' ली है। अग्रवाल ने कहा कि वह 24 जनवरी 2008 के आयकर विभाग के एक सर्कुलर से व्यथित हैं जिसमें कहा गया है कि जीवन बीमा पालिसी धारक के जीवित रहने तक उसके दिब्यांग आश्रित को कोई लाभ नहीं दिया जा सकता।

पीठ ने अपने फैसले में कहा कि इस बात को उठाने में याचिकाकर्ता सही हो सकता है कि ऐसे भी मामले हो सकते हैं जहां बीमाधारक के दिब्यांग आश्रितों को उनके अभिभावकों और संरक्षकों के जीवनकाल में ही वार्षिक भत्ता अथवा एकमुश्त राशि की जरूरत हो।

दिव्यांग और महिला यात्री ने किया एयरपोर्ट पर बने एयरोब्रिज का लोकार्पण, AAI ने कहा- यह 'नया VIP कल्चर'

एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया ने 'नया वीआईपी कल्चर' करार दिया

पूर्वोत्तर राज्य असम में एक एयरपोर्ट पर हुए एक उद्घाटन कार्यक्रम में प्रशासन ने अच्छी मिसाल पेश की। मामला गुवाहाटी में बोर्झार स्थित लोकप्रिय गोपीनाथ बोर्दोलोई इंटरनेशनल एयरपोर्ट का है। यहां हाल ही में दो एयरोब्रिज का लोकार्पण होना था। यह लोकार्पण किसी वीआईपी से करवाने के बजाए एयरपोर्ट अथॉरिटी ने एक आम महिला और उसकी दिव्यांग बेटी से कराया। खास बात यह रही कि इस पहल को एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया ने 'नया वीआईपी कल्चर' करार दिया। नए साल पर मिली इस नई सुविधा से यात्रियों को काफी आसानी होगी।

इसी एयरपोर्ट पर पहले भी दी गई थी मिसालः नए साल पर हुए इस लोकार्पण के दौरान की गई एयरपोर्ट अथॉरिटी की इस पहल को सोशल मीडिया पर भी लोगों ने खूब सराहा। वैसे इससे पहले भी इसी एयरपोर्ट पर रिटेल आउटलेट्स का उद्घाटन भी यात्रियों से ही करवाया गया था। इन दो नए एयरोब्रिज के लोकार्पण से यात्रियों को काफी आसानी होगी। इस एयरपोर्ट पर अब कुल चार एयरोब्रिज हो गए हैं। पहले सिर्फ दो ब्रिज होने से काफी भीड़ हो जाती थी।

कार्यक्रम में कई दिग्गजों ने शिरकत की थी। इस लोकार्पण कार्यक्रम के दौरान एएआई के क्षेत्रीय कार्यकारी निदेशक डी.के. कामरा भी मौजूद रहे। उनके अलावा इस कार्यक्रम में गुवाहाटी एयरपोर्ट के निदेशक रमेश कुमार समेत कई एयरलाइंस कंपनियों के प्रतिनिधि और सीआईएसएफ (केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल) के अधिकारी भी मौजूद रहे। दिव्यांग और महिला यात्रियों से लोकार्पण की इस पहल को देशभर में काफी तारीफें मिल रही हैं।

डिस्लेक्सिया

डिस्लेक्सिया शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्द डस और लेक्सिस से मिलकर बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है कथन भाषा (डिफिकल्ट स्पीच)। वर्ष 1887 में एक जर्मन नेत्र रोग विशेषज्ञ रूडोल्बर्लिन द्वारा खोजे गए इस शब्द को शब्द अंधता भी कहा जाता है। डिस्लेक्सिया को भाषायी और संकेतिक कोडों भाषा के ध्वनियों का प्रतिनिधित्व करने वाले वर्णमाला के अक्षरों या संख्याओं का प्रतिनिधित्व कर रहे अंकों के संसाधन में होने वाली कठिनाई के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह भाषा के लिखित रूप, मौखिक रूप एवं भाषायी दक्षता को प्रभावित करता है यह अधिगम अक्षमता का सबसे सामान्य प्रकार है।

डिस्लेक्सिया के लक्षण

- वर्णमाला अधिगम में कठिनाई
- अक्षरों की ध्वनियों को सीखने में कठिनाई
- एकाग्रता में कठिनाई
- पढ़ते समय स्वर वर्णों का लोप होना
- शब्दों को उल्टा या अक्षरों का क्रम इधर – उधर कर पढ़ा जाना, जैसे नाम को मान या शावक को शक पढ़ा जाना
- वर्तनी दोष से पीड़ित होना
- समान उच्चारण वाले ध्वनियों को न पहचान पाना
- शब्दकोष का अभाव
- भाषा का अर्थपूर्ण प्रयोग का अभाव तथा
- क्षीण स्मरण शक्ति

डिस्लेक्सिया की पहचान

उपर्युक्त लक्षण हालाँकि डिस्लेक्सिया की पहचान करने में उपयोगी होते हैं लेकिन इस लक्षणों के आधार पर पूर्णत: विश्वास के साथ किसी भी व्यक्ति को डिस्लेक्सिया घोषित नहीं किया जा सकता है। डिस्लेक्सिया की पहचान करने के लिए सं 1973 में अमेरिकन फिजिशियन एलेना बोडर ने बोड टेस्ट ऑफ़ रीडिंग स्पेलिंग पैटर्न नामक एक परिक्षण का विकास किया। भारत में इसके लिए डिस्लेक्सिया अर्ली स्क्रीनिंग टेस्ट और डिस्लेक्सिया स्क्रीनिंग टेस्ट का प्रयोग किया जाता है।

वॉइस टू
दिव्यांग

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

डिस्लेक्सिया का उपचार

डिस्लेक्सिया पूर्ण उपचार अंसभव है लेकिन इसको उचित शिक्षण - अधिगम पद्धति के द्वारा निम्नतम स्तर पर लाया जा सकता है।

 वैकल्पिक शिक्षण तकनीकें: शिक्षक और विशेष शिक्षा से जुड़े विशेषज्ञ सीखने के वैकल्पिक तरीकों का इस्तेमाल करते हैं। उदाहरण के लिए, पाठों को ऑडियो टेप के ज़रिए याद करना, पढ़ते हुए अक्षरों के आकारों को स्पर्श या महसूस करना और तस्वीरों और चित्रों की मदद से शब्दों को पहचानना. ये अभ्यास आपकी वोकैब्यलेरी यानि शब्दकोश को बढ़ा सकते हैं।

 सिखाना: पठन विशेषज्ञ फ़ोनेटिक्स यानि स्वरविज्ञान और अन्य वैकल्पिक तरीक़ों से डिस्लेक्सिया से जूझ रहे बच्चों के पढ़ने के कौशल को सुधारने में मदद कर सकते हैं।

 वैयक्तिक शिक्षा योजना (Individualized Education Plan-IEP): सुपरिभाषित और सुस्पष्ट लक्ष्यों के साथ सीखने की एक सुगठित और व्यवस्थित योजना, बच्चों के लिए मददगार हो सकती है।